eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के निर्धारक तत्वः अनुभव और दृष्टिकोण की भूमिका

उपेन्द्र नाथ यादव[1]
[1]सहायक प्राध्यापक, बीबी फातमा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, समस्तीपुर (बिहार)

Received: 21 Jan 2026 Accepted & Reviewed: 25 Jan 2026, Published: 31 Jan 2026

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन 'विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के निर्धारक तत्त्वः अनुभव और दृष्टिकोण की भूमिका' विषय पर केंद्रित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, शैक्षिक तथा सामाजिक अनुभव तथा उनके दृष्टिकोण किस प्रकार उनकी शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन क्षमता को प्रभावित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि केवल बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, पारिवारिक सहयोग तथा पूर्व शैक्षिक अनुभव भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार समायोजन क्षमता विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक अनुभव, आत्म–धारणा और समस्या–समाधान दृष्टिकोण से प्रभावित होती है। इस अध्ययन में यह मान्यता रखी गई है कि जिन विद्यार्थियों के अनुभव समृद्ध एवं सकारात्मक होते हैं तथा जिनका दृष्टिकोण आशावादी और लक्ष्य–उन्मुख होता है, वे न केवल शैक्षिक क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करते हैं बल्कि विद्यालय एवं समाज में भी बेहतर समायोजन प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत नकारात्मक अनुभव और निराशावादी दृष्टिकोण विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं समायोजन दोनों को प्रभावित कर सकते हैं। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों और शैक्षिक प्रशासकों को यह समझने में सहायक होगा कि विद्यार्थियों के अनुभवों को समृद्ध बनाकर तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर उनके समग्र शैक्षिक और सामाजिक विकास को कैसे सुदृढ़ किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता, अनुभव, दृष्टिकोण एवं विद्यार्थी का विकास।

Introduction

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण, समाजीकरण तथा जीवन–उन्नयन का सबसे सशक्त साधन है। विद्यार्थी जीवन में शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन क्षमता, दो ऐसे महत्वपूर्ण पहलू हैं, जो न केवल उसकी वर्तमान प्रगति को प्रभावित करते हैं बल्कि भविष्य की दिशा भी तय करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि से आशय है कि विद्यार्थी किस हद तक अपने अध्ययन में सफलता प्राप्त करता है, जैसे परीक्षा परिणाम, विषयों की समझ, कौशलों का अर्जन आदि। वहीं समायोजन क्षमता से तात्पर्य है कि विद्यार्थी बदलते परिवेश, परिस्थितियों और चुनौतियों के साथ कितना तालमेल बैठा पाता है। इन दोनों क्षमताओं के निर्धारण में अनुभव और दृ ष्टिकोण की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अनुभव विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से सीखने का अवसर देता है और दृष्टिकोण उन्हें सकारात्मकता या नकारात्मकता की ओर प्रेरित करता है। यदि विद्यार्थी को सहयोगी परिवार, प्रेरक शिक्षक और अनुकूल वातावरण का अनुभव मिलता है, तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन क्षमता दोनों प्रबल होती हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक अनुभव और प्रतिकूल दृष्टिकोण उसे असफलता, तनाव और असंतुलन की ओर ले जाते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

प्रस्तुत विषय के अंतर्गत अनुभव और दृष्टिकोण को विद्यार्थियों के विकास के निर्णायक तत्वों के रूप में देखा जा सकता है। अनुभव केवल अध्ययन से संबंधित नहीं होते, बल्कि वे सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत परिस्थितियों से भी प्राप्त होते हैं। प्रत्येक अनुभव विद्यार्थी की सोच और व्यवहार को प्रभावित करता है। इसी तरह दृष्टिकोण का संबंध विद्यार्थी की मानसिक प्रवृत्ति और परिस्थितियों के प्रति उसके नजरिए से है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला विद्यार्थी हर कठिनाई को अवसर मानकर आगे बढ़ता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाला विद्यार्थी चुनौतियों से भागने लगता है। इस प्रकार, अनुभव और दृष्टिकोण की परस्पर क्रिया विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता को निर्धारित करती है। यही कारण है कि शिक्षा–प्रणाली में ऐसे अवसर और वातावरण निर्मित किए जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को सकारात्मक अनुभव प्राप्त हों और उनमें रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित हो।

2. शैक्षिक उपलब्धि और अनुभव की भूमिका– शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक होती है। यह न केवल परीक्षा परिणाम से आंकी जाती है, बल्कि विषयों की गहन समझ, विश्लेषण क्षमता, रचनात्मकता और अनुप्रयोग कौशल से भी जुड़ी होती है। अनुभव शैक्षिक उपलब्धि को सीधा प्रभावित करता है। यदि विद्यार्थी ने पूर्व में शिक्षा से संबंधित सकारात्मक अनुभव प्राप्त किए हैं, जैसे शिक्षकों से प्रोत्साहन, सहपाठियों का सहयोग और सफलता का आनंद, तो वह शिक्षा को आकर्षक मानकर उत्साहपूर्वक सीखता है। दूसरी ओर, यदि विद्यार्थी को असफलता, डांट, उपेक्षा या भेदभाव जैसे नकारात्मक अनुभव प्राप्त होते हैं, तो उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो जाती है। उदाहरण स्वरूप, एक विद्यार्थी जिसने प्रारंभिक कक्षाओं में गणित विषय को कठिन अनुभव किया, वह भविष्य में भी गणित से दूर भाग सकता है। इसके विपरीत, यदि उसी को उचित मार्गदर्शन और सफल अनुभव मिलते हैं, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और उसकी उपलब्धि में सुधार होगा।

अनुभव विद्यार्थी के आत्म–विश्वास, आत्म–प्रेरणा और कार्य–क्षमता को भी प्रभावित करता है। लगातार सकारात्मक अनुभव विद्यार्थी को न केवल शैक्षिक रूप से सफल बनाते हैं बल्कि उसमें जीवनभर सीखते रहने की प्रवृत्ति भी विकसित करते हैं। अनुभवजन्य अधिगम शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके अनुसार विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों से अधिक गहराई से सीखता है। यदि विद्यार्थी को प्रयोगशाला में काम करने, शैक्षिक भ्रमण में भाग लेने और प्रोजेक्ट कार्य करने का अवसर मिलता है, तो उसकी उपलब्धि केवल सैद्धांतिक नहीं रहती बल्कि व्यावहारिक भी बनती है। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों को ऐसे अवसरों का अनुभव नहीं मिलता, उनकी शैक्षिक उपलब्धि सीमित रह जाती है। अतः अनुभव विद्यार्थियों की उपलब्धि का आधार होता है, जो उन्हें आत्मविश्वास और रचनात्मक सोच प्रदान करता है।

3. समायोजन क्षमता और अनुभव का संबंध– समायोजन क्षमता से आशय है कि व्यक्ति जीवन की विविध परिस्थितियों, समस्याओं और परिवर्तनों के साथ संतुलन बनाकर कैसे आगे बढ़ता है। विद्यार्थी जीवन में यह क्षमता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय, परिवार और समाज की अपेक्षाएँ लगातार बदलती रहती हैं। अनुभव इस क्षमता के विकास में मुख्य भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी को परिवार और विद्यालय में सहयोग एवं मार्गदर्शन का अनुभव मिलता है, तो वह नई परिस्थितियों में सहजता से ढल जाता है। वहीं, प्रतिकूल अनुभव जैसे उपेक्षा, असफलता या भेदभाव, विद्यार्थी को असुरक्षित बना सकते हैं। लेकिन सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ वही नकारात्मक अनुभव भी जीवन के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा बन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

सकते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि अनुभव विद्यार्थी की मानसिक दृढ़ता और परिस्थितियों के अनुकूलन को मजबूत बनाता है।

विद्यार्थी का सामाजिक और भावनात्मक विकास भी अनुभवों पर आधारित होता है। यदि उसे मित्रता, सहयोग और समूह–कार्य का सकारात्मक अनुभव मिलता है, तो उसकी सामाजिक समायोजन क्षमता बढ़ती है। इसके विपरीत, यदि वह अलगाव, उपेक्षा या असफलता का अनुभव करता है, तो उसका सामाजिक व भावनात्मक समायोजन प्रभावित हो सकता है। उदाहरण स्वरूप, किसी विद्यार्थी ने विद्यालय में वाद–विवाद प्रतियोगिता में असफलता का अनुभव किया, लेकिन शिक्षक ने उसे प्रोत्साहित किया और अगली प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर दिया, तो यह अनुभव उसे और मजबूत बनाएगा। इसलिए, अनुभव केवल तत्कालीन समायोजन ही नहीं बल्कि दीर्घकालीन मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशलों के विकास का भी आधार है।

4. शैक्षिक उपलब्धि में दृष्टिकोण की भूमिका– शैक्षिक उपलब्धि केवल विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता या स्मरण शक्ति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें उनके दृष्टिकोण की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। दृष्टिकोण से तात्पर्य है कि विद्यार्थी का अपने अध्ययन, विषयों और शिक्षा–प्रक्रिया के प्रति कैसा मानसिक दृष्टिकोण है, (सकारात्मक, नकारात्मक या उदासीन)। यदि विद्यार्थी का दृष्टिकोण सकारात्मक है, तो वह कठिन विषयों को भी चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और सीखने की प्रेरणा बनाए रखता है। उदाहरण के लिए, कोई विद्यार्थी गणित विषय में कठिनाई महसूस करता है, लेकिन यदि उसका दृष्टिकोण यह है कि मेहनत से सब संभव है, तो वह अधिक अभ्यास करके अच्छे अंक प्राप्त कर सकता है। वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण वाला विद्यार्थी कठिनाई से घबराकर पढ़ाई से दूरी बना लेता है, जिससे उसकी उपलब्धि प्रभावित होती है। इस प्रकार दृष्टिकोण सीखने की गहराई, निरंतरता और सफलता का निर्धारण करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार दृष्टिकोण विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्म–विश्वास और धैर्य को नियंत्रित करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला विद्यार्थी परीक्षा में असफल होने पर निराश नहीं होता, बल्कि अपनी गलतियों से सीखकर अगली बार अधिक परिश्रम करता है। इसके विपरीत नकारात्मक दृष्टिकोण असफलता को स्थायी मानकर आगे के प्रयासों को कमजोर कर देता है। यह भी देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों का दृष्टिकोण शिक्षा के प्रति अनुकूल होता है, वे कक्षा गतिविधियों, सह–पाठयक्रम क्रियाओं और प्रायोगिक कार्यों में अधिक सक्रिय रहते हैं, जिससे उनकी उपलब्धि बहुआयामी बनती है। इसलिए शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरक शिक्षण विधियों का प्रयोग करें। जब विद्यार्थी यह अनुभव करता है कि उसका दृष्टिकोण उसके भविष्य की सफलता में निर्णायक है, तब वह शिक्षा को केवल अंक प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि आत्म–विकास और जीवन–निर्माण का मार्ग समझता है।

5. दृष्टिकोण और समायोजन क्षमता का संबंध– समायोजन क्षमता विद्यार्थियों की उस योग्यता को दर्शाती है, जिसके माध्यम से वे बदलते सामाजिक, पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण में तालमेल बिठाते हैं। इस क्षमता पर दृष्टिकोण का गहरा प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला विद्यार्थी कठिनाइयों को अवसर मानकर आगे बढ़ता है और नई परिस्थितियों में शीघ्र सामंजस्य स्थापित कर लेता है। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी विद्यार्थी को नया विद्यालय मिलता है, तो सकारात्मक दृष्टिकोण उसे नए मित्र बनाने, नई विधियों को सीखने और वातावरण को स्वीकार करने में मदद करता है। वहीं नकारात्मक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

दृष्टिकोण रखने वाला विद्यार्थी अकेलेपन, हीन भावना और असुरक्षा का शिकार हो सकता है। इस प्रकार दृष्टिकोण यह तय करता है कि विद्यार्थी किसी परिस्थिति को चुनौती मानकर आगे बढ़ेगा या समस्या मानकर पीछे हट जाएगा।

विद्यार्थियों की सामाजिक और भावनात्मक समायोजन क्षमता भी उनके दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। यदि किसी विद्यार्थी का दृष्टिकोण समूह–गतिविधियों के प्रति अनुकूल है, तो वह सहपाठियों के साथ आसानी से घुल–मिल जाता है और सामूहिक कार्यों में सक्रिय रहता है। इससे उसका सामाजिक समायोजन बेहतर होता है। दूसरी ओर, नकारात्मक दृष्टिकोण उसे अलगाव, असंतोष और तनाव की ओर ले जाता है। भावनात्मक समायोजन में भी दृष्टिकोण निर्णायक भूमिका निभाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण वाला विद्यार्थी आलोचना को सुधार का अवसर मानता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाला विद्यार्थी इसे अपमान समझकर निराश हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर दिया जाए, जिससे कि वे जीवन की परिस्थितियों से संतुलन बनाकर आगे बढ़ सकें।

6. अनुभव और दृष्टिकोण का परस्पर संबंध– अनुभव और दृष्टिकोण दोनों ही परस्पर पूरक हैं और एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। यदि विद्यार्थी को बार–बार सकारात्मक अनुभव प्राप्त होते हैं, जैसे–परीक्षा में सफलता, शिक्षक का सहयोग, परिवार का प्रोत्साहन, तो उसका दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से सकारात्मक बनता है। इसी प्रकार सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला विद्यार्थी नकारात्मक अनुभवों से भी शिक्षा लेकर उन्हें अवसर में बदल सकता है। उदाहरण स्वरूप, यदि कोई विद्यार्थी प्रतियोगिता में असफल होता है, लेकिन उसका दृष्टिकोण यह है कि "अगली बार और अच्छा करना है", तो यह नकारात्मक अनुभव भी उसके लिए प्रगति का आधार बन जाएगा। वहीं लगातार नकारात्मक अनुभव, जैसे उपेक्षा, असफलता या भेदभाव, विद्यार्थी के दृष्टिकोण को भी नकारात्मक बना सकते हैं। इस प्रकार अनुभव और दृष्टिकोण का आपसी संबंध विद्यार्थियों की उपलब्धि और समायोजन क्षमता को गहराई से प्रभावित करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान में यह माना गया है कि दृष्टिकोण और अनुभव का चक्र एक–दूसरे को लगातार पोषित करता है। अच्छा अनुभव अच्छा दृष्टिकोण बनाता है और अच्छा दृष्टिकोण आगे और अच्छे अनुभवों की संभावना पैदा करता है। इसी तरह बुरा अनुभव बुरा दृष्टिकोण पैदा करता है और बुरा दृष्टिकोण आगे और नकारात्मक अनुभवों को जन्म देता है। इस चक्र को तोड़ने और सकारात्मक दिशा में मोड़ने की जिम्मेदारी शिक्षक और अभिभावक दोनों की होती है। यदि किसी विद्यार्थी का दृष्टिकोण नकारात्मक हो गया है, तो उसे प्रेरक अनुभव प्रदान करके सकारात्मक बनाया जा सकता है। इसी तरह यदि विद्यार्थी ने नकारात्मक अनुभव झेला है, तो उसका दृष्टिकोण सकारात्मक बनाकर उसे भविष्य के लिए उत्साहित किया जा सकता है। इसीलिए अनुभव और दृष्टिकोण का यह पारस्परिक संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति तथा जीवन की सफलता में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष– उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन क्षमता के निर्धारण में अनुभव और दृष्टिकोण का विशेष महत्व है। अनुभव विद्यार्थी को वास्तविक परिस्थितियों से सीखने का अवसर प्रदान करता है, जबकि दृष्टिकोण यह तय करता है कि वह उन परिस्थितियों को किस रूप में ग्रहण करेगा। सकारात्मक अनुभव और रचनात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल अपनी शैक्षिक उपलब्धि में प्रगति करता है बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

अनुभव और नकारात्मक दृष्टिकोण उसके मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंधों और शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षकों और अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों को सकारात्मक अनुभव दिए जाएँ और उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जाए, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी और समायोजन क्षमता भी सुदृढ़ बनेगी। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए शिक्षा–प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल जानकारी देना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें ऐसे अनुभव और दृष्टिकोण प्रदान करना चाहिए जो उन्हें जीवनभर सफलता और संतुलन की राह पर अग्रसर करें।

संदर्भ सूची–

1. शर्मा, एस. पी. (2018). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक, अर्चना पब्लिकेशन नई दिल्ली।

2. मिश्रा, आर. एन. (2019). समायोजन एवं व्यक्तित्व विकास का अध्ययन, विनोद बुक कंपनी आगरा।

3. तिवारी, किरण (2020). विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और अनुभव का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, भारतीय शैक्षिक समीक्षा, खंड 64(3), पृ. 42–55।

4. वर्मा, एस. के. (2021). विद्यालयी परिवेश एवं विद्यार्थी समायोजन के निर्धारक तत्व, समकालीन शिक्षा पत्रिका, खंड 9(2), पृ. 17–29।

5. जोशी, अर्चना (2020). किशोर विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं आत्म–संकल्प के मध्य संबंध का अध्ययन, लर्निंग पब्लिशस प्रयागराज ।

6. पांडेय, आर. के. (2019). अनुभवजन्य अधिगम और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक दर्पण, खंड 12(1), पृ. 33–44।

7. सिंह, नरेन्द्र (2018). शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, खंड 37(4), पृ. 61–72।

8. चौहान, एस. एस. (2017). मानव विकास और अधिगम, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ।

9. कुमार, हरीश (2021). शिक्षा में दृष्टिकोण, प्रेरणा एवं उपलब्धि का पारस्परिक संबंध, शोधदीप, खंड 9(2), पृ. 49–58।

10. यादव, प्रमोद (2023). किशोरों की समायोजन क्षमता पर सामाजिक अनुभवों का प्रभाव, समाज और शिक्षा जर्नल, खंड 7(3), पृ. 14–26।

11. अग्रवाल, मीना (2020). शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–संकल्प के निर्धारक तत्व, शुभम प्रकाशन जयपुर।

12. मिश्रा, अजय (2022). विद्यालयी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर दृष्टिकोण एवं अध्ययन आदतों का प्रभाव, विनोद पब्लिशिंग हाउस आगरा।